मनोज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 206 मूल्य : 25.00
चाणक्य का बेटा
fenzz
02. ocean11
STUDIO KADAM
राम-रहीम
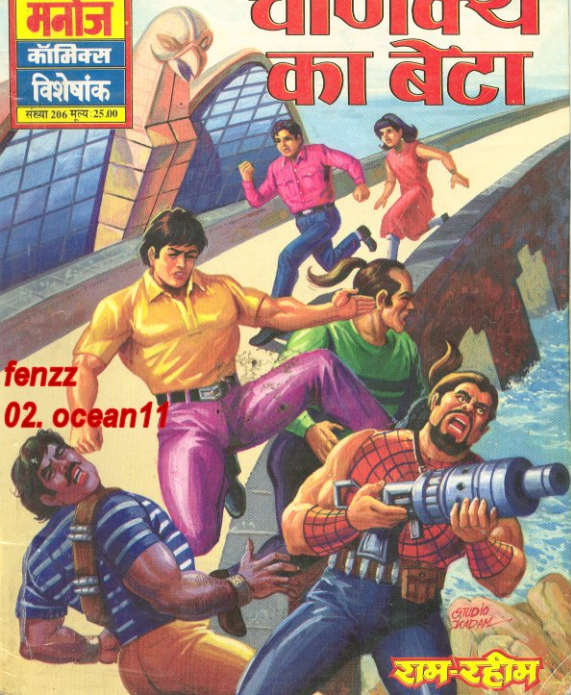
चाणक्य का बेटा

लेखक : महेन्द्र जैन.   सम्पादन : संदीप गुप्ता.   चित्रांकन : कदम स्टूडियो.

हां! अब जल्दी से अपना नाम-पता बताओ ताकि हम तुम्हारे घरवालों को सूचित कर सकें।
घर... नाम...! ये तुम क्या कह रहे हो! कौन हो तुम?
मैं मुम्बई का सबसे कड़क इंस्पेक्टर ताड़के हूं। सीधी तरह बताओ छोकरे...
मगर मैं अपना नाम नहीं जानता! मुझे तो यह भी नहीं पता कि मैं कहां का रहने वाला हूं।
ओह माई गॉड! यह अपनी याददाश्त खो बैठा है इं. ताड़के।
ओह! लेकिन कैसे?
हमारे मास्तिष्क की संरचना बेहद जटिल होती है इंस्पेक्टर। मास्तिष्क में कोशिकाओं का एक समूह ऐसा भी है जो जीवन में बीते हुए हर लम्हे को टेप की भांति अपने अन्दर कैद कर लेता है।
यदि किसी कारणवश यह समूह क्षतिग्रस्त हो जाए तो व्यक्ति का मास्तिष्क खाली कैसेट की तरह हो जाता है। अर्थात वह बीते हुए कल की तमाम बातें भूल जाता है।
ओह! तब तो इस लड़के की पहचान के लिए मुझे इसका अखबार में फोटो सहित इश्तिहार देना होगा। शायद कोई इसकी खबर लेने आ जाए।
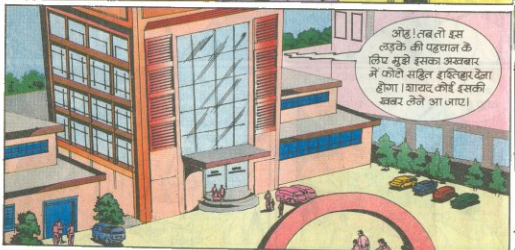
इधर राजनगर में-
देखो मां! हमारे सामने कई महीनों से खाली पड़े मकान में कोई नया किरायेदार आ गया है।
चलो अच्छा हुआ। खाली पड़े-पड़े वह मकान भूत बंगले की तरह लगने लगा था।
कितनी प्यारी बच्ची है।
जल्दी जा रहीम। वे नये-नये आए हैं। हो सकता है उन्हें किसी चीज की आवश्यकता हो। आखिर हमें पड़ोसी का फर्ज तो निभाना ही चाहिए।
कुछ क्षणों पश्चात रहीम सामने वाले मकान में था।
नमस्ते आण्टी। मेरा नाम रहीम है। मैं सामने वाले मकान में रहता हूं।
ओह! अच्छा-अच्छा। मेरा नाम सुमित्रा है...
...और यह है मेरी बेटी 'दिलासा'
और कोई दिखाई नहीं पड़ रहा?
इसके पापा बहुत पहले इस दुनिया से चल बसे। दिलासा का एक भाई था। यही कोई तुम्हारी उम्र का। अब उसका कोई अता-पता नहीं।

सुबकsss
देखा! तुमने मम्मी को रूला दिया ना।
मुम्बई में हमारा शानदार फ्लैट था, मगर पापा व भैया की यादें मम्मी को सदैव परेशान किया करती थीं। इसीलिए हम उसे छोड़कर यहां चले आए।

ओह! आप इस शहर में नयी-नयी आई हैं आण्टी। यदि कभी किसी चीज की जरूरत हो तो मुझे बुला लेना।
अवश्य बेटे!
अनोखे किरायेदार हैं ये। लगता है इनके जीवन में कोई बहुत बड़ा तूफान गुजरा है।

गहरी सोच में डूबे रहीम ने अभी अपने मकान में कदम रखा ही था कि-
मांsss
फड़... फड़... फड़...

राधा मां... क्या हुआ? राधा मां... आंखें खोलो। राधा मांSSS

ठण्डे पानी के छींटों ने राधादेवी की मूर्छा भंग की।
आह! र... राम..मेरा बेटा राम!
राम... क्या हुआ राम को?

वह...वह मुम्बई के एक अस्पताल में... सुबकSSS
राम अस्पताल में!

अगले क्षण रहीम की नजर अखबार में छपे इश्तिहार पर पड़ी।
मनोज टाइम्स
मुंबई
दर 3·00
अपील--
यह लड़का अपनी याददाश्त गंवा बैठा है। इस लड़के से संबंधित रिश्तेदार, मित्र या अन्य जान-पहचान वाले व्यक्ति लाला लाजपत राय अस्पताल में आकर संपर्क करें।

मुझे फौरन मुम्बई पहुंचना होगा।
fenzz

उस हाहाकारी इश्तिहार को पढ़कर अब भला रहीम को कहां रुकना था!
कहीं ऐसा न हो कि मेरे पहुंचने से पहले ही हमारे सैकड़ों दुश्मनों में से कोई उसे अगवा करके ले जाए। या खुदा...! राम की रक्षा करना!

लाला लाजपत राय अस्पताल के सामने आकर रुकी यह मारुति एस्टीम।
तुम हमारा यहीं इन्तजार करो।
जी साहब।

कार से उतरने वाले शख्स का चेहरा पत्थर की भांति कठोर था।
टक

छड़ी के सहारे चलता हुआ वह रिसेप्शन काउण्टर पर पहुंचा।
अखबार में यह इश्तिहार...
ओह! आप सर्जिकल वार्ड में चले जाइए। वहां डॉ. भास्कर व इं. ताड़के दोनों मौजूद हैं।

कुछ ही पलों में वह सर्जिकल वार्ड में था।
हैलो! मेरा नाम सेठ जीवनदास है।
ओह! सेठ जीवनदास जी! मुम्बई के जाने-माने उद्योगपति! कहीं आप इसे...

यस इं० ताड़के। मैं इसे लेने आया हूं। यह मेरा होने वाला दामाद है। मेरी बेटी कोमल का मंगेतर। रोशन नाम है इसका।
व्हाट!
??

इतने बड़े उद्योगपति का होने वाला दामाद ...इस हालत में ?
सब विधि का विधान है डॉक्टर साहब।
मगर मैं आपको जानता तक नहीं। कौन हैं आप ? और यह दामाद-वामाद का क्या चक्कर है इं. साहब... यह मुझे किस चक्रव्यूह में फंसाया जा रहा है ?
हम आपके दर्द को समझते हैं रोशन बाबू।
माफ कीजिए सेठजी, मुझे आपसे व आपकी बेटी कोमल से पूरी सहानुभूति है। मगर पुलिस कार्रवाई तो करनी ही पड़ेगी।
शायद आप मुझसे इस व्यक्ति के मेरा दामाद होने का सबूत मांग रहे हैं। सबूत मैं साथ ही लाया हूं।
ये देखिए। ये वो फोटोग्राफ्स हैं जो रोशन बाबू व मेरी बेटी कोमल की मंगनी के समय खींचे गए थे।
देखिए। इस फोटो में रोशन बाबू मेरी बेटी को अंगूठी पहना कर सगाई की रस्म पूरी कर रहे हैं।

इस फोटो में वे एक-दूसरे को मिठाई खिला रहे हैं।

और तो और...शादी के बाद इन्हें हनीमून के लिए स्विट्जरलैण्ड जाना था। इसके लिए मैंने पासपोर्ट व वीजा भी तैयार करवा लिया था... देख लीजिए।

अब हमें पूरा यकीन हो गया है सेठजी कि मुसीबत का मारा यह इंसान आप ही का होने वाला दामाद है। आप इसे ले जा सकते हैं।
थ... थैंक्यू इंस्पेक्टर।

जिस तरह एक कैसेट के टेप को खाली करके उसमें दोबारा गाने भरे जा सकते हैं, उसी तरह मैं रोशन बाबू के दिमाग में दोबारा नये सिरे से पुरानी बातें लौटाने की कोशिश करूंगा।

याददाश्त गंवा बैठे राम के कड़े प्रतिरोध के बावजूद उसे लेकर मारुति एस्टीम अस्पताल से रवाना हो गई।
वूsssss

होटल 'गरुड़' जो अपनी अनोखी बनावट, कलात्मकता व भव्यता के लिए समूची मुम्बई के आकर्षण का केन्द्र था। मगर कोई नहीं जानता था कि वह होटल मुम्बई अण्डरवर्ल्ड के बादशाह 'मूलचन्दानी' की निजी मिल्कियत थी।
बड़ी खबर एकदम सच है भी! कहीं दारू-वारू गले में झोंककर मूलचन्दानी से मजाक करने तो नहीं आया भी साईं?
नहीं बॉस! खबर एकदम सच है। वह सचमुच रोशन है। मगर वह अपनी याददाश्त गंवा बैठा है। मुम्बई पुलिस ने अखबार में उसकी बाबत खबर छापी है।

छापे* में खबर पढ़ी... और मेरे पास दौड़ा चला आया।वड़ी अस्पताल में राउण्ड मारकर क्यों नहीं आया साईं।
* छापा: अखबार
मैं गया था बॉस। मगर मालूम पड़ा कि कोई जीवनदास नामक सेठ उसे अपना होने वाला दामाद बता कर अस्पताल से ले गया।
रोशन नामक वह दो टके का छोकरा सेठ जीवनदास जैसे उद्योगपति का दामाद कैसे हो सकता है वड़ी।
मकड़ा.फ्रौरन जा और रोशन को उठा ला।
जी बॉस।
उधर रहीम लाला लाजपत राय अस्पताल में पहुंचा।
मेरा नाम रहीम है डॉ. साहब। जिस मरीज के बारे में अखबार में इश्तिहार छपा है वो मेरा मुंहबोला भाई राम है।
राम... यह कैसे हो सकता है, वह तो रोशन है
रोशन! कौन रोशन!! क्या मैं अपने भाई को नहीं पहचानूंगा डॉ. साहब ?
मगर उसे तो सेठ जीवनदास जी अपना होने वाला दामाद बताकर ले गए हैं।
अवश्य कोई गड़बड़ है डॉ. साहब। आप मुझे सेठ जीवनदास का पता बताइए।
fenzz

ऐसा न कहो रोशन। क्या भूल गए वो सब कसमे-वादे जो हमने साथ मिलकर उठाए थे। कुछ तो याद करने की कोशिश करो रोशन।

उफ! तुम मुझे सचमुच पागल करके छोड़ोगी।

धड़ाक
तुम्हारा अतीत हम बताएंगे चूहे।
क... कौन हो तुम ?
नाम हमारा मकड़ा है, सबको हमने रगड़ा है।
नहीं। हमारे पतिदेव को हाथ ना लगाना। इ... इनकी याददाश्त खो गई है।
चल हट छोकरी। इसकी याददाश्त तो अब हम लौटाएंगे।
धड़ाक
आह! मुझे छोड़ दो। क्यों घसीट रहे हो मुझे ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?
हमारा नहीं! मगर हमारे बॉस का बहुत कुछ बिगाड़ा है।

मकड़ा साहब इस लड़की का क्या करें?
करना क्या है! इसे किचन में बांधकर डाल दो। मुंह में कपड़ा ठूंस दो और गैस स्टोव ऑन कर दो।

न... नहींऽऽऽ
चल... चल!

उधर राम को लिए वैन रवाना हुई... इधर वह टैक्सी आकर रुकी।
यह ले सौ का नोट। छुट्टे भी तू ही रख ले।

ड्राईवर के हाथ में नोट थमा कर रहीम कोठी की तरफ आया।
शुक्र है। अब राम मुझे मिल जाएगा।

राम... राम कहां हो तुम?
गैस की बदबू आ रही है।

गूं... गूं... गूं...
ओह नो!
अपनी सांस रोक लो बहन। गैस को शरीर में मत जाने दो।
गैस ऑफ करने के बाद वह कोमल को लेकर बाहर भागा।
आह...आह... हिच्च...हिच्च!
इसे फौरन शुद्ध ऑक्सीजन की जरूरत है। क्योंकि गैस इसके शरीर में प्रवेश कर गई है।
काफी देर बाद कोमल सामान्य हुई तो उसने अपनी आप बीती रश्मि को सुनाई।
ओह! आप चिन्ता मत कीजिए कोमल जी। दुश्मनों ने आपको मारना चाहा। आपकी मौत होगी... जरूर होगी।
व्हाट?
म... मेरा मतलब है नकली मौत। समझ लीजिए आज से आप दुनिया की नजरों में मर चुकी हैं।
आप जिन्दा हैं। यह राज तुम्हारे अलावा मैं... सिर्फ मैं जानता हूं!
आखिर करना क्या चाहते हो तुम?
देखती जाओ।

लगभग एक घण्टे पश्चात–
व्हाट! सेठ जीवनदास के घर में आग लग गई। ओह! मैं भी पहुंच रहा हूं।

अपनी याददाश्त गवां बैठा वह रोशन नामक व्यक्ति भी कोठी में ही पनाह लिए हुए है। कहीं यह महज इत्तफाक तो नहीं। क्या चक्कर है?

जब इं. ताड़के घटनास्थल पर पहुंचा तो, फायर ब्रिगेड आग पर काबू पा चुकी थी।
अन्दर कोई मौजूद तो नहीं?
क्या मालूम? अब तुम आ गए हो। आओ देखते हैं।
FIRE
FIRE

कोठी के फर्श पर कीचड़ हो गया था।
खौंsss खौंsss इधर तो कोई नहीं।
कमाल है! रोशन व कोमल कहां चले गए?

खौंsss खौंsss वो उधर क्या पड़ा है?
उफ! यह दमघोंटू धुआं।
किधर?

हे भगवान! लाश... जनाना लाश! निस्सन्देह यह कोमल ही है! खौंsss खौंsss
कोमल?
अब सारी कहानी स्पष्ट हो गई दामले! वह कमीना रोशन कोमल को आग में झोंक कर फरार हो गया। उसी ने कोमल को मारा है।
पहेलियां मत बुझाओ यार! साफ साफ बताओ, बात क्या है?
इं० ताड़के ने दामले नामक उस फायर ब्रिगेड अधिकारी को सभी बात बताई।
ओह! तो वह याददाश्त खोया हुआ व्यक्ति था, जिसने पागलपन की जुनूनी अवस्था में यह कहर बरपा दिया?
हां दामले! मगर मैं उस कमीने को छोड़ूंगा नहीं।
fenzz
मगर वह गया कहां होगा?
मालूम नहीं। मगर इं० ताड़के से कब तक बचेगा? कभी तो पकड़ में आएगा।

इधर गरुड़ होटल के बेसमेण्ट में-
छपाक
आह... हssss
धन्न झूलेलाल! तू होश में तो आया नी! वरना मैं तो समझा था कि तू मुर्दों से शर्त लगाकर सो गया है। अब कभी उठेगा ही नहीं।
क... कौन हो तुम?
लो... अपने बाप को भूल गया साईं! अरे हम हैं मूलचन्दानी। कुछ याद आया?
इसे कैसे याद आएगा बॉस। यह तो अपनी याददाश्त गंवा बैठा है।
यह तो अपनी याददाश्त गंवा बैठा साईं! मगर हमारे तो दो करोड़ के सोने पर उस्तरा फिर गया नी!
मुझे किसी सोने के बारे में नहीं मालूम! मैं कौन हूं? हे भगवान... यह किन लोगों के बीच फंस गया हूं मैं?
लो... यह तो साधु-संत बन गया नी। भगवान की माला जपता है। मकड़ा... इसे जरा वो करोनी... क्या कहते हैं उसे?
टार्चर!
हां वही.... वही!

कुछ ही क्षणों में राम छत से उल्टा लटका झूले की भांति इधर-उधर झूल रहा था।
ये सब क्या है? क्यों मुझे परेशान कर रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?
दो करोड़ का सोना कहां है?
मुझे किसी सोने के बारे में नहीं मालूम। मैं तो अपना नाम तक नहीं जानता। मुझे नाम तो बताओ मेरा।
तुम्हारा नाम रोशन है। तुम हमारे गैंग के विश्वस्त आदमी हो। इसीलिए बॉस ने तुम्हें सिल्वर बीच पर दुबई से आने वाला दो करोड़ का सोना लेने भेजा था।
तुम्हारे साथ गरजा व परसा नामक हमारे ही गैंग के दो आदमी और भी थे, सोने को सही-सलामत कार की डिक्की में रखकर तुम सिल्वर बीच से रवाना भी हो चुके थे।
बॉस! हमने सोने की डिलीवरी लेली है और हम इस समय दहिसर खाड़ी की तरफ बढ़ रहे हैं। एक घण्टे बाद हम मुम्बई में होंगे।
गुड... गुड!

मगर उसके बाद तुम्हारा सम्पर्क हमसे टूट गया। और तुम तीनों छलावे की भांति गायब हो गए। बाद में तुम पुलिस को बेहोशी की हालत में दहिसर खाड़ी के निकट पड़े मिले। जबकि गरजा व परसा की लाशें तक नहीं मिलीं।
मगर मैं सच कहता हूं। यह सब मुझे नहीं मालूम। भगवान के लिए मेरी बात पर विश्वास करो।
यह ऐसे नहीं बताएगा। इसे नीचे उतारो।

कुछ क्षणों पश्चात फर्श पर चित पड़े राम के हलक से चीखें उबल रही थीं।
अब भी समय है रोशन! बता दे... सोना कहां है?

मैं कुछ जानता होता तो अब तक बता न देता! अरे! मैं तो वो अभागा इंसान हूं, जिसे अपना नाम तक नहीं मालूम।
मत बता... यह मोम तब तक इसी तरह पिघल-पिघलकर तेरे ऊपर गिरता रहेगा, जब तक तू बताएगा नहीं कि सोना कहां है।

ठहरो! सोना ढूंढने की एक तरकीब है। मुझे बॉस के पास ले चलो।
चल मर!

मूलचन्दानी की आंखें सोचने के अन्दाज में सिकुड़ी हुई थीं।
तो तू यह चाहता है साईं कि एक बार तुझे उस रास्ते से गुजारा जाए जिस रास्ते से तू सोना लेकर मुम्बई आ रहा था।

यस बॉस।
मगर क्यों?

मेरी बात को समझने की कोशिश कीजिए बॉस। हो सकता है कि जब मैं उस रास्ते से गुजरूं तो राह में कोई खास जगह... जहां हमारे साथ दुर्घटना घटी थी। उसे देखकर मेरी यॉददाश्त लौट आए।

ठीक है। यही कर साईं।
थैंक्यू बॉस।

सिल्वर बीच-
मुम्बई से अस्सी किलोमीटर दूर स्थित एक निर्जन तट, जो स्मगलरों के लिए स्वर्ग समझा जाता है।
यही सिल्वर बीच है, जहां से तुम सोना लेकर रवाना हुए थे।
ठीक है। अब जीप आगे बढ़ाओ।

अगले क्षण जीप दौड़ने लगी।
अब हम धीरे-धीरे मुम्बई की तरफ बढ़ रहे हैं। यही वो रास्ता है जहां से तुम्हें सोना लेकर मुम्बई पहुंचना था।

याद रहे! यदि मुम्बई पहुंचने तक भी तुम्हारी याददाश्त वापस न लौटी तो मैं हमेशा के लिए तुम्हें मौत की गहरी नींद सुला दूंगा।

लगभग आधे घण्टे बाद जीप पक्की सड़क पर दौड़ती हुई दहिसर खाड़ी की तरफ बढ़ रही थी।
सामने दहिसर खाड़ी का पुल दिखाई देने लगा है। अब भी कुछ याद आया कि नहीं?
नहीं... अभी तक तो कुछ याद नहीं आया।

साला हलकट! लगता है, बॉस के हाथों कुत्ते की मौत मरकर रहेगा।

कुछ ही क्षणों में जीप दहिसर खाड़ी के एक किलोमीटर लम्बे पुल पर थी।
रोको... जीप रोको!
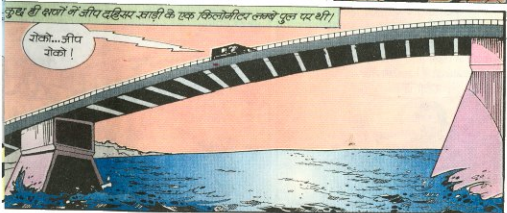
तेज आवाज के साथ जीप के टायर थम गए।
चर्र्र्र्र्
चर्र्र्र्र्
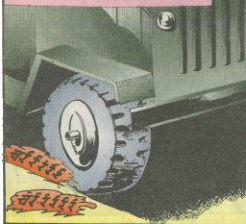
अब क्या हुआ साले भुलक्कड़?
म... मुझे कुछ-कुछ याद आ रहा है। शायद यहीं पर हमारे साथ दुर्घटना घटी थी।

मकड़ा की आंखें आश्चर्य से फैलती चली गईं।
तुम सब यहीं ठहरो। म... मैं एक बार पुल की रेलिंग तक चक्कर मार कर आता हूं। शायद मुझे सब कुछ याद आ जाए।
मेरे आदमी भी तेरे साथ रेलिंग तक जाएंगे।

समझने की कोशिश कीजिए मकड़ा साहब! बन्दूकों के साये में मैं कुछ याद नहीं कर पाऊंगा।
ठीक है। मगर मैं तेरे साथ चलूंगा।
कोई बहस नहीं
ठीक है चलो!

राम की कनपटी पर रिवॉल्वर टिकाए मकड़ा धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।
कोई भी गलत हरकत करने से पहले याद रखना..मेरा नाम मकड़ा है। सबको मैंने रगड़ा है।

बाकी पांचों बदमाश रेलिंग की तरफ बढ़ते राम को ताक रहे थे।

जीप व पुल की रेलिंग के बीच कम-से-कम बीस गज का फासला था।
रेलिंग के निकट पहुंच कर राम ध्यानपूर्वक नीचे देखने लगा।
दहिसर खाड़ी का ठाठें मारता पानी पुल की सीधे ढलान वाली दीवार से टकराकर वापस लौट रहा था।
कुछ याद आया भुलक्कड़?
हां! सब कुछ याद आ गया!
शाबाश! बता क्या याद आया?
ये!
धड़ाक

सब कुछ बड़ी तेजी से हुआ था। जब तक मकड़ा उठ कर खड़ा होता, राम पुल की रेलिंग से नीचे छलांग लगा गया।

साले हलकट!
धांय धांय धांय
धांय धांय धांय

मकड़ा का रिवॉल्वर खाली हो गया, मगर राम कुशल नट की भांति पुल की ढलवां दीवार पर तेजी से लुढ़कता चला गया था।

अगले क्षण वह पुल की दीवार से टकराते पानी में समा गया।
छपाक

पांचों स्नेकगनधारी पलक झपकते ही रेलिंग के निकट पहुंच चुके थे।

अब कोई फायदा नहीं,वापस चलो।

गहरी निराशा के साथ नफड़ा अपने साथियों के साथ खाली हाथ वापस स्वाना हो गया।

दहिसर खाड़ी में दूर-दूर तक राम का अता-पता नहीं था।
fenzz
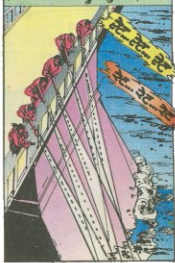
इधर सेठ जीवनदास की कोठी पर-
यह सब क्या हो गया इं० ताड़के। किन राक्षसों ने मेरी फूल सी बच्ची को जला कर मार डाला? सुबकऽऽऽ
वह एक ही राक्षस है सेठजी। स्वयं आपका होने वाला दामाद रोशन।

मगर रोशन तो कोमल को दिल की गहराइयों से प्यार करता था। वह भला अपने दिल के टुकड़े को क्यों मारेगा।
मत भूलिए सेठजी। वह इस समय अपनी याददास्त गंवाए हुए है।

और याददास्त गंवाया हुआ व्यक्ति कभी भी जुनूनी अवस्था में खतरनाक रूप अख्तियार कर लेता है। रोशन ने उसी जुनूनी अवस्था में कोमल की हत्या की है।

मगर आप चिन्ता न कीजिए सेठजी। कानून के हाथ बहुत लम्बे हैं। रोशन जहां कहीं भी होगा, कानून की पकड़ में अवश्य आएगा।
अपनी बेटी की मौत से बुरी तरह टूटा हुआ यह बूढ़ा उस रोशन के बच्चे को फांसी के फंदे पर झूलते हुए देखना चाहता है।
ऐसा ही होगा सेठजी।
इधर राजनगर में -
आ गया बेटे! कहां है मेरा राम?
राम मेरे हाथ से निकल गया मां।
क्या कह रहा है तू! देख... मुझे और न सता। यह जरूर तुम दोनों की कोई नयी शैतानी है। जब तक तुम मुझे परेशान नहीं कर लेते, तुम्हें चैन थोड़े ही पड़ता है।
नहीं मां! इस बार हमने तुम्हें परेशान करने के लिए कोई नया नाटक नहीं किया है। तू पहले मेरी पूरी बात तो सुन।
तत्पश्चात् रहीम मुम्बई में घटी सारी घटना राधा देवी को सुनाता चला गया।
काश! मैं सेठ जीवनदास की कोठी पर थोड़ा जल्दी पहुंच गया होता।

न जाने कहां होगा मेरा लाल ?

सार्वजनिक अपील
सूचित किया जाता है कि यह लड़का अपनी याददाश्त खो चुका है और मुम्बई में सेठ जीवनदास की बेटी कोमल का मर्डर करके भागा है। कृपया ऐसे खतरनाक मुजरिम को पकड़वाने में मुम्बई पुलिस का सहयोग करें।
* सूचना देने वाले को उचित इनाम दिया जाएगा।
अपीलकर्ता
मुम्बई पुलिस....

इश्तिहार पढ़कर बिच्छू काटे सा उछला था राज -
हे भगवान ! यह तो मेरे ही बारे में लिखा है और मेरा फोटो भी सार्वजनिक कर दिया गया है...
दहिसर खाड़ी में कूदने के बाद किसी तरह छुपते-छिपाते राज मुम्बई के दादर रेलवे स्टेशन पर पहुंचा था।

...और अपील में जिस सेठ जीवनदास के बारे में लिखा है। यह तो वही है जो मुझे अपना होने वाला दामाद बता कर अपनी कोठी पर ले गया था। पर मैंने उसकी बेटी को नहीं मारा। ये बात सिर्फ मैं जानता हूं...

...लेकिन लोग इस बात को थोड़े ही समझेंगे। मुझे फौरन पैसेंजर ट्रेन की जगह मालगाड़ी में छिप जाना चाहिए।
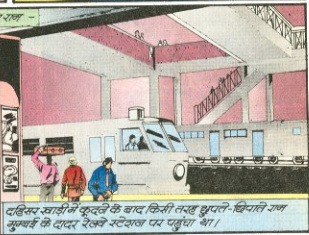
कुछ क्षणों पश्चात राम एक मालगाड़ी के डिब्बे में छुपा हुआ था।
किसी तरह मूलचन्दानी के आदमियों से अपनी जान बचाई थी मैंने...

...सोचा था कि मैं मुम्बई से सुरक्षित बचकर निकल जाऊंगा। मगर उस इश्तिहार ने मेरे प्राण संकट में डाल दिए हैं। न जाने अब क्या होगा?

तभी मालगाड़ी लम्बी व्हिसल देती हुई दादर स्टेशन से रवाना हुई।
व्हीं...

राम ने चैन की लम्बी सांस ली और फिर आंखें मूंदकर डिब्बे की दीवार से पीठ टिकाकर बैठ गया।
न जाने कहां होगी अब मेरी मंजिल?

इधर होटल गरूड़ में –
वड़ी। तू भी वहीं डूब कर मर जाता नी। यह मनहूस खबर सुनाने यहां क्यूं चला आया साईं!

मुझसे गलती हो गई बॉस। मैं उस लड़के को समझने में गलती कर गया। मुझे उसे जंजीरों में जकड़ कर रेलिंग की तरफ ले जाना चाहिए था।

मगर लेकर तो नहीं गया था साईं! इसीलिए वह तुझे अंगूठा दिखाकर टाटा-बाई-बाई करके भाग गया।
मगर बॉस! रोशन बहुत अच्छा तैराक है। इसलिए उसके दहिसर खाड़ी में डूब कर मरने की बात मेरे गले नहीं उतरती।
धन्न झूलेलाल! कोई तो बात है जो तेरे गले नहीं उतरी। यानी तेरे विचार से वो पुट्टा खाड़ी में डूबने के बजाय पानी में हाथ-पैर मार कर कहीं दूर निकल गया होगा नी
जी बॉस!
...और यही एक बात है जिसकी वजह से हमें अभी दो करोड़ का सोना वापस मिलने की उम्मीद छोड़नी नहीं चाहिए।
बशर्ते वो कम्बख्त भूलक्कड़िया डूब कर मरा नहीं हो तो।
वैसे उम्मीद पर ही सारे जीव-जन्तु व पेड़-पौधे कायम हैं साईं। झूलेलाल तेरी बात सच साबित करे।
पिक... पिक...
हैलो! किसने ट्रांसमीटर खटकाया है साईं?
हम चुंग-ली बोल रहे हैं मूलचन्दानी।

राम-राम साईं!
हम एक जरूरी मिशन को पूरा करने के लिए इण्डिया आ रहे हैं और इसके लिए हमें खासतौर से तुम्हारी जरूरत पड़ेगी।

आ जाओ चुगली साईं, आ जाओ।
चुगली नहीं... चुंग-ली!
fenzz

ठीक है...ठीक है साईं चुगली। नहीं... नहीं चुंग-ली।
लगता है, चीन में अच्छे नामों का टोटा है।

इधर मालगाड़ी राजनगर जंक्शन पर रुकी।
शुक्र है! गेट पर कोई टिकट कलेक्टर नहीं खड़ा है। वरना ख्वाम-ख्वाह परेशान करता।

मगर मैं कहां जा रहा हूं। मेरी मंजिल कहां है? क्या इस दुनिया में मैं बिल्कुल अजनबी हूं?

राम के मस्तिष्क में घुमड़ रहे विचारों का क्रम एकाएक थम गया।
धड़ड़ ड़ ड़ऽऽऽ
उफ!
टाक
आहऽऽऽ

लड़खड़ाता हुआ राम सड़क पर औंधे मुंह गिरा था।
र...राम मेरे भाई!
क...कौन हो भैया?

मुझे नहीं पहचाना मेरे भाई। मैं रहीम...तुम्हारा मुंहबोला भाई।

मेरा कोई भाई नहीं है दोस्त। मैं बड़ी मुश्किल से अपने जीवन की नैया को एक तूफानी झंझावात से निकाल कर लाया हूं। अब मैं किसी के चंगुल में नहीं फंसना चाहता।

अब तुम किसी के चंगुल में नहीं फंसोगे राम। मेरे साथ आओ... मां तुम्हें देखकर बहुत खुश होगी।

कुछ समय पश्चात्-
राम! मेरे बेटे तू आ गया।
कौन हैं आप? हम आपको नहीं जानते।

यह सब क्या हो गया मेरे बेटे। तू अपनी याददाश्त कैसे गंवा बैठा? सुबक ऽऽ

धैर्य रखो मां। वैसे अच्छा ही हुआ जो यह अपनी याददाश्त गंवा बैठा। अब यह उन सौ रुपयों के बारे में भी भूल गया होगा जो इसने मुझे उधार दिए थे।
कैसा लड़का है रे तू? ऐसी विषम परिस्थितियों में भी तुझे मजाक सूझ रहा है?
स...सॉरी!
उसी रात-
उस मकान में कौन रहता है?
नये किरायेदार आए हैं। एक स्त्री व एक मासूम सी बच्ची है। बेचारों के साथ विधाता ने बड़ा क्रूर खेल खेला है। स्त्री का पति बहुत पहले ही इस दुनिया से चल बसा और हमारी ही उम्र का उसका एक बेटा मुम्बई में पिछले कुछ दिनों से लापता है।
ओह!
बेचारे मुम्बई की कटु स्मृतियों से पीछा छुड़ाने के लिए यहां रहने चले आए। बड़े अच्छे पड़ौसी हैं। दिलासा तो एकदम परी जैसी है!

मगर तुम्हें इन सबसे क्या मतलब? तुम तो अपनी याददाश्त खो चुके हो। रात बहुत बीत चुकी है। अब चुपचाप सो जाओ।

मगर राम की आंखों में नींद कहां थी।
कौन हैं ये पड़ोसी? क्या मेरी तरह ही नितान्त अजनबी।

अगली सुबह-
सुबह-सुबह चाय की पत्ती खत्म हो गई। और मां ने मुझे राधा आंटी के घर चाय की पत्ती लेने दौड़ा दिया।
टिंगऽऽ टांग

दरवाजा खुलते ही चौंक पड़ी दिलासा।
रोशन भैया!
रोशन भैया! कौन रोशन भैया?

मेरे रोशन भैया। वो जो सामने सोफे पर बैठे हैं, वही तो मेरे रोशन भैया हैं। म... मैं अभी मां को बुलाकर लाती हूं।

पगलाया सा खड़ा रह गया रहीम।
या खुदा... यह क्या नया झमेला है? अब राम रोशन कैसे हो गया?

उफ! मेरी तो खोपड़ी नाच उठी है।
बेटे... मेरे बेटे!
fenzz
मेरे बच्चे... मेरे रोशन कहां था रे तू। क्यों तड़पा रहा था अपनी मां को?
रोशन भैया। हम आपसे बहुत नाराज हैं।
आप सब यह क्या कह रहे हैं। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। न मैं राम हूं न रोशन। मैं तो बस किस्मत का मारा खुदा का बन्दा हूं जो खुद अपनी पहचान के लिए इधर-उधर मारा-मारा भटक रहा है।
ये क्या कह रहा है रहीम?
सच बात तो ये है मांजी कि मेरा दिमाग खुद चक्कर-घिन्नी होकर रह गया है। मैं क्या कहूं?
दरअसल बहनजी! जिसे आप अपना बेटा रोशन समझ रही हैं, वह मेरा राम है। आपको इसे पहचानने में गलती हो रही है।
एक मां अपने लाल को पहचानने में कभी गलती नहीं करती बहन।
मैं अपना आंचल फैलाकर तुमसे अपने बेटे की भीख मांगती हूं। मुझे मेरा रोशन दे दो।
उफ! अब मैं क्या करूं? इसे कैसे समझाऊं कि जो बात इसने कही है वो एक मां पर कितनी खरी उतरती है।

म... मैं अपने राम को नहीं दूंगी।
और मैं तुमसे अपना सैतान लेकर रहूंगी।
अजीब गुत्थी थी। दोनों माएं उसे अपना बेटा बता रही थीं... जो खुद अपनी पहचान तलाशने के लिए मारा-मारा फिर रहा था।

और यह खबर समूचे राजनगर में पेट्रोल में लगी आग की तरह फैल गई थी।
सुना तुमने। हम सबका हीरो राम अपनी याददाश्त खो बैठा।
बहुत बुरा हुआ।

हे वाहेगुरू! अब इस शहर नूं चोर-उचक्कों दे कहर तों तू ही बचाना।
क्या अब राम की याददाश्त कभी वापस नहीं आएगी?

दारू के अड्डों पर दिवाली मनाई जा रही थी।
चियर्स!
चियर्स!
पियो और जियो!

सुना है राम तो एकदम ही फुस्स हो गया।
उसके दिमाग की तो घण्टी बज गई।
हा... हा... हा...

साला कई बार मेरी बुरी तरह पिटाई कर चुका है। अब आएगा जुर्म करने का मजा।
मजा ही मजा। हा... हा... हा...

इधर राजनगर पुलिस थाने में-
अजीब केस है इं० द्रोण। राधादेवी उसे अपना बेटा बता रही है।
जी सर! जबकि उनके सामने रहने वाली सुमित्रादेवी नामक स्त्री उसे अपना खोया हुआ बेटा रोशन बताती हैं।

तुम इस केस की पूरी तहकीकात करो द्रोण और मुझे रिपोर्ट दो।
यस सर!

इंस्पेक्टर द्रोण को आया देख उछल पड़ा रवि-
इंस्पेक्टर द्रोण! तुम! बात क्या है?
पूरे राजनगर में उथल-पुथल मची हुई है। और तुम कह रहे हो कि बात क्या है। यह सब क्या ड्रामा है?

ड्रामा... कैसा ड्रामा?
बनो मत। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि तुम दोनों अव्वल दर्जे के सुगफाली हो। कब किस करवट बैठ जाओ कोई नहीं जानता।

हम क्या ऊंट हैं जो करवट लेंगे?
क्या बात है... ये कौन है?

आइये... आइये! आजकल बड़े चर्चे हैं शहर में आपके! सुना है बड़ों-बड़ों को तिगनी का नाच नचाए हुए हो तुम। आखिर लफड़ा क्या है?
कैसा लफड़ा इंस्पेक्टर साहब! मुझे तो अपना नाम तक नहीं मालूम। ऐसा लगता है जैसे मैंने इस दुनिया में उसी दिन कदम रखा, जिस दिन अस्पताल में मेरी बेहोशी टूटी।
ठीक है, अपनी कहानी अस्पताल से ही शुरू करो।
जब अस्पताल में मेरी बेहोशी टूटी तो मैं अपनी याददाश्त गंवा बैठा था। तत्पश्चात जीवनदास नामक सेठ मुझे अपना होने वाला दामाद बताकर अपने घर ले गया। किन्तु मैं किसी तरह वहां से भाग कर एक मालगाड़ी में सवार होकर राजनगर पहुंच गया...
...जहां संयोगवश मेरी मुलाकात रहीम से हुई। जो राम-राम जपता हुआ मुझे इस घर में ले आया। वह कहता है कि मैं इसका भाई हूं।

कमाल के आदमी हो यार। कहीं पर दामाद बने बैठे हो, कहीं पर बेटे, तो कहीं पर भाई। ऊपर से तुर्रा यह कि तुम्हें खुद नहीं मालूम कि तुम कौन हो।

अब इसमें मैं क्या कर सकता हूं इंस्पेक्टर साहब।

हां। तुम क्या कर सकते हो। जो करना है, वह तो मुझे ही करना होगा। अच्छा चलता हूं। फिर मुलाकात होगी।

आते रहिएगा इं-सा
फिलहाल तो य
अपना घर है।

...वैसे याददाश्त गंवा बैठे राम ने अपनी कहानी में मुम्बई के जिस सेठ जीवनदास का जिक्र किया है, मैं उसके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वयं मुंबई जा रहा हूं
गुड!
दरअसल राम का संबंध भारतीय सीक्रेट सर्विस से है! इसीलिए गृह मंत्रालय से सीधा आदेश आया है कि हम इस केस को जल्द से जल्द सुलझा लें।
मैं अपनी पूरी ताकत झोंक दूंगा सर!
इधर मुम्बई के होटल गरुड़ में-
बड़ी शानदार खबर छपी है बॉस। रोशन हमारे चुंगुल से बच कर राजनगर पहुंच गया है और इस समय कर्नल राघव के घर पनाह लिए हुए है।
क्या छपा है *छापे में?
यानी...यानी हमारा भुलक्कड़ भाई दहिसर खाड़ी में डूब कर मरा नहीं था साईं।
जी बॉस!
बढ़िया... बोत बढ़िया खबर सुनाई है तूने साईं! मजा आ गया जी। और बता... और क्या छपा है छापे में?
* छापा : अखबार

छपा है कि राम की
लेकर दो-दो माओं में ठनी। यानी उसने अपना नाम भी बदल लिया। रोशन से बदलकर राम रख लिया।
यह दो मांओं का क्या चक्कर है साईं। यह रोशन का बच्चा तो धमाके पर धमाके किए जा रहा है। वड़ी तू फौरन राजनगर जा...
fenzz
...और उस रोशन के बच्चे को मुर्गा बनाकर हमारे सामने पेश कर। कहीं वह फिर कोई धमाका न कर बैठे साईं।
और वह दो मांओं वाला चक्कर भी पता करके आऊं?
उसे अभी रहने दे साईं। मैं खुद ही रोशन की घण्टी बजाकर उससे सब मालूम कर लूंगा नी।
जी बॉस! मैं अभी इसी वक्त राजनगर रवाना होता हूं।
इधर द्रोण मुम्बई पहुंचा।
आओ द्रोण! मुझे तुम्हारे आने की सूचना मिल गई थी।
थैंक्यू!
द्रोण ने सर्वप्रथम ताड़के को वह कहानी सुनाई जो उसने राम से सुनी थी। सुनकर भड़क उठा था ताड़के।
झूठ बोलता है वह। वह सेठ जीवनदास की कोठी से भागा जरूर था। मगर उनकी बेटी कोमल का मर्डर करके।
व्हाट?

हां द्रोण। वह एक इश्तिहारी मुजरिम है। मुम्बई पुलिस उसे कोमल मर्डर केस में गिरफ्तार करने के लिए सरगर्मी से तलाश कर रही है।
तब तो हमें उसे फौरन गिरफ्तार कर लेना चाहिए।

यस! मैं स्वयं तुम्हारे साथ राजनगर चलूंगा द्रोण।

एक साथ पांच-छः जीपें राम के घर के सामने आकर रुकीं।
यही है कर्नल राघव का घर जहां वह रोशन नामक हत्यारा पनाह लिए हुए है।

कोठी को चारों तरफ से घेर लो। वह कहीं फरार न हो जाए।
जी साहब!

पलक झपकते ही टिड्डी दल की भांति कोठी के चारों तरफ बिखर गई पुलिस फोर्स।

मां! देखो... पुलिस सामने वाले घर को घेर रही है।
ओह! कहीं यह मेरे रोशन बेटे को तो गिरफ्तार करने नहीं आई?
इधर, बाहर से आती भारी बूटों की आवाज सुनकर रहीम भी उछल पड़ा था।
यह शोर-शराबा कैसा?

या खुदा! पुलिस ने धावा बोल दिया है। तुम... तुम फौरन छुप जाओ राम।
म...मगर मैं क्यों छुपूं?

छुप जा मेरे बाप। कभी-कभी कहना भी मान लिया कर।
छ...छुप रहा हूं ना। भड़कता क्यों है?

बिजली की गति से खुला था दरवाजा।
भड़ाक

इंस्पेक्टर! यह कौन-सा तरीका है घर में घुसने का?
रोशन कहां है?

रोशन नहीं राम कहो उसे। वह मेरा भाई राम है।
समझने की कोशिश करो रहीम। वह राम नहीं है, वह मुम्बई से कोमल का कत्ल करके भागा इश्तिहारी मुजरिम रोशन है।
एक पल के लिए उछल पड़ा रहीम, फिर संभलकर बोला -
यह अवश्य ही राम को फंसाने के लिए तुम लोगों ने नई चाल चली है।
जरा अक्ल से काम लो रहीम। हम भला राम को कत्ल के इल्जाम में क्यों फंसाएंगे। जबकि हमें मालूम है कि उसकी जिन्दगी देश के लिए कितनी अनमोल है।
बल्कि हमें तो खुशी होगी कि अदालत उसे राम साबित कर दे, ताकि वह फांसी पर झूलने से बच जाए।
अदालत चाहे उसे कुछ भी साबित करे इंस्पेक्टर। मगर वो मेरा बेटा रोशन है।
आपकी तारीफ?
ये मेरी मां हैं इंस्पेक्टर अंकल...और जिसे आप गिरफ्तार करने आए हैं वो मेरे रोशन भैया हैं।
हमसे हमारे रोशन भैया को नहीं छीनिए। सुबकsss
ओह! तो आप हैं वो मां। जो राम को अपना बेटा रोशन होने का दावा कर रही हैं।

कुछ ही क्षणों में पुलिस फोर्स राम को गिरफ्तार करके वापस लौट गई।

सुबक sss अब क्या होगा भैया?

रोमल बहन! वह तेरा भाई है या मेरा...यह फैसला तो हम बाद में भी कर लेंगे। फिलहाल तो उसे जमानत पर रिहा करवाना होगा।

पर यदि अदालत ने साबित कर दिया कि वह रोशन ही है तब तो उसे फांसी लगनी निश्चित ही है, क्योंकि वह मुम्बई में किसी कोमल नामक लड़की की हत्या करके भागा है...

...इससे तो अच्छा है कि अदालत उसे राम ही साबित कर दे। कम-से-कम वह फांसी पर चढ़ने से तो बच जाएगा।

आप चिन्ता न कीजिए मांजी। अदालत चाहे उसे राम घोषित करे या रोशन। मगर मैं उसे फांसी पर नहीं चढ़ने दूंगा।

वो कैसे?

मैंने सब सोच लिया है। अब तुम एक घण्टे के अन्दर-अन्दर यह मालूम करके आओ कि आज रात सेन्ट्रल जेल में रोशन की कोठरी के बाहर किसकी ड्यूटी रहेगी।

एक घण्टे बाद दोनों बदमाश इस मरियल से संतरी के साथ वापस मकड़ा के सामने उपस्थित हुए।

क्या नाम है तेरा?

पा... पांडुरंग।

कितनी तनख्वाह मिलती है?
पन्द्रह सौ रुपये महीना... बड़ी मुश्किल से गुजारा चलता है हुजूर। मेरे छः बच्चे हैं। बड़ी लड़की के हाथ भी पीले करने हैं।
हम तुझे छः लाख देंगे। वह भी सिर्फ एक छोटे से काम के। तुम्हें रोशन को जेल से भगाना होगा।
म...मगर मेरी नौकरी चली जाएगी हुजूर।
नहीं जाएगी। सारा काम बड़े योजनाबद्ध तरीके से होगा। यह ले तीन लाख। और अब ध्यान से मेरी बात सुन।
मकड़ा ने उस संतरी को समझा दिया अपना प्लान।
उसी रात जेल की कोठरी में–
शीऽऽऽ
क... कौन?
मैं यहां का संतरी हूं। पाण्डुरंग नाम है मेरा। मुझसे आपकी दुर्दशा देखी नहीं जाती। इतना बड़ा जासूस... और इस तरह जेल में!
सब किस्मत का फेर है पाण्डुरंग।
नहीं सर, नहीं। आपको दुश्मनों का चक्रव्यूह तोड़ने के लिए इस जेल से बाहर कदम रखना ही होगा। आपको 'चाणक्य का बेटा' बन कर दिखाना होगा। मैं... मैं आपको इस जेल से फरार कराऊंगा।

आइये सर! ईश्वर आपकी मदद करे।
लेकिन तुम्हारी नौकरी का क्या होगा पाण्डुरंग?
चिन्ता मत कीजिए। मेरी नौकरी पर कोई आंच नहीं आएगी। क्योंकि तुमने पेटदर्द का बहाना बना कर मुझे अन्दर बुलाया है। और मेरे अन्दर आते ही तुम मुझे बेहोश करके फरार हो गए।

इस तरह!
ठाक
उफ!

खून से लथपथ पाण्डुरंग फर्श पर बिछ गया।
मैं तुम्हारा अहसान जीवन भर नहीं भूलूंगा पाण्डुरंग।

अगले क्षण राम गैलरी में दौड़ता चला गया।

जेल के अहाते में-
अरे! कोई कैदी दीवार फलांग कर भाग रहा है। पकड़ो उसे!

सन्तरियों की राइफलें गरज उठीं।
धांय
धांय
लेकिन राम दीवार फांदकर एक झाड़ी के ऊपर गिरा था।
तभी–
धाक
आऽऽऽ
इसे वैन में डालो और फौरन यहां से निकलो... जल्दी !
कुछ ही क्षणों में वैन हवा बन गई।
वूऽऽऽ वूऽऽऽ वूऽऽऽ
रोशन हमारे कब्जे में आ चुका है बॉस।
शाबाश! उस भुलक्कड़ भाई को लेकर फौरन पहुंच जाओ! मैं उसकी आरती उतारूंगा। बलइयां लूंगा उसकी।
निस्संदेह राम एक बार फिर गहरी मुसीबत में फंस गया था।

इधर द्रोण पाण्डुरंग पर बरस रहा था।
इडियट! तुम्हें कोठरी का ताला खोलने की क्या जरूरत थी ?
मुझसे उसकी हालत देखी नहीं गई थी सर। वह पेट दर्द के मारे बिना पानी की मछली की भांति छटपटा रहा था।
वो वहीं मर ही क्यों न जाता। तुम्हारी जरा सी गलती ने हमारी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया।
स... सॉरी सर!
fenzz
झाड़ियों के पास से रोशन के कदमों के बजाय किसी वेन के टायरों के निशान मिले हैं। जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि रोशन जेल से पूरी प्लानिंग के तहत भागा है।
यानी रोशन की पीठ पर किसी शक्तिशाली व्यक्ति का हाथ है। यह केस तो उलझता ही जा रहा है द्रोण।
पता नहीं... इस समय वह कहां होगा ?
काश... इन्हें मालूम होता कि रोशन उर्फ राम एक बार फिर मूलचन्दानी के चंगुल में फंस चुका था।
आओ भुलक्कड़ भाई... आओ जी। कहो, कैसे हो साईं ? घूम आए राजनगर! वड़ी, अपने भुलक्कड़ भाई के लिए कुछ ठण्डा-गरम लाओ जी।

तुम तो दहिसर खाड़ी में कूद कर भाग गए। ये भी नहीं सोचा कि हमारे दो करोड़ के सोने का क्या होगा?
मैं आपसे कितनी बार कह चुका हूं बॉस कि मैं आपके दो करोड़ के सोने के बारे में नहीं जानता।
तो फिर सोना ढूंढने का नाटक क्यों किया था?
क्योंकि मैं आपके हाथों से अपनी जान बचाना चाहता था। मैं याददाश्त गंवाया, भाग्य का मारा इन्सान हूं। मुझे आप क्यों परेशान कर रहे हैं?
वड़ी, नहीं करेंगे परेशान। अब हम तुझे पुचकारेंगे। बस... खुश!
मकड़ा... इसे वो खेल दिखाओ नी। क्या कहते हैं उसे... झूला झुलाने वाला!
कुछ ही समय पश्चात राम की चीखें उबल रही थीं।
शाबाश! और जोर से झूला झुलाओ नी!

एक बार फिर रस्सी के सहारे छत से उल्टा लटका राम दीवार से जा टकराया।
आहऽऽ
धड़ाक

आहऽऽ
धड़ाक

यह तो बेहोश हो गया बॉस!
वड़ी, मुंह पर पानी मारकर होश में लाओ नी।

ठण्डे-ठण्डे पानी ने राम की मूर्छा दूर कर दी।
छपाक
आहऽऽ

आह! पानी... पानी... सोना डूब रहा है! गरजा... परसा...पानी...बचो! सोने को बचाओ... आह! म...मैं कहां हूं?
ये क्या बक रहा है साईं?
लगता है, पागल हो गया बॉस!

म...मुझे सब कुछ याद आ रहा है बॉस! मुझे सब कुछ याद आ रहा है।
धन्न झूलेलाल!
इसे नीचे उतारो!

गरजा की गलती से। जब हम तीनों सिल्वर बीच से सोना लेकर रवाना हुए तब कार गरजा चला रहा था और वह बराबर शराब पिए जा रहा था।

गाड़ी सम्भाल गरजा!

कुछ नहीं होगा। गाड़ी मेरे इशारों पर नाचती है।

मगर किस्मत को शायद मुझे अभी जिन्दा रखना था। इसलिए मैं न जाने कैसे बहते हुए किनारे पर आ लगा। जहां से मुम्बई पुलिस ने मुझे बरामद किया।

सत्यानाश हो उस गरजा के बच्चे का। झूलेलाल उसे अगले जन्म में कीड़ा बनाए। मकड़ा... तू फौरन अपने कुछ आदमियों के साथ जा। साथ में रोशन को भी ले जा...
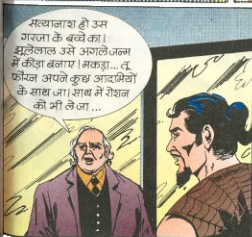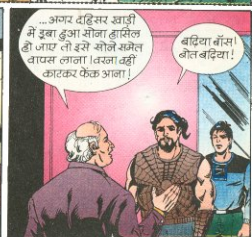
दहिसर खाड़ी के दूर-दूर तक उछालें मारते पानी पर डोल रही थी यह शिपनुमा बोट-

अगले क्षण चार गोताखोर पानी में डुबकी लगा गए।

लगभग पन्द्रह मिनट बाद गोताखोर पानी की सतह से बाहर निकले।

अगले क्षण शिपनुमा बोट पर लगी विशालकाय क्रेन द्वारा बुरी तरह पिचकी हुई कार को बाहर निकाला गया।
सोना मिल गया! तेरी जान बच गई रोशन।

कुछ समय पश्चात-
वाह साई, वाह! तूने तो कमाल ही कर दिया नी। सचमुच तूने मेरा सच्चा आदमी बन कर दिखा दिया। आज से हम तुझे मकड़ा के बराबर का ओहदेदार नियुक्त करते हैं।
थैंक्यू बॉस!

ये ट्रांसमीटर किसने खटखटाया साई?

वड़ी कौन...ओह तुम? हां बोलो नी। कब... कल? ठीक है साई। बोत अच्छा साई..बोत अच्छा।

चीनी सीक्रेट सर्विस का सबसे धूर्त जासूस चुंग-ली आ रहा है। कल उसे एयरपोर्ट पर रिसीव करने तुम जाओगे रोशन!
जी बॉस।

मुम्बई का इंटरनेशनल एयरपोर्ट-
चांद इतरा रहा है। चांदनी शरमा रही है।
हुम्म! कोड ठीक है। अपना नाम बोलो।
AIR

मेरा नाम रोशन है। मुझे बॉस ने इसी कोड के साथ आपको रिसीव करने भेजा था।आइये सर!

कुछ देर बाद होटल गरूड़ में-
वैलकम साईं वैलकम! आओ जी.. गले मिलो जी साईं चुगली।
चुगली नहीं! चुंग-ली।

नाम को मार गोली! ये बता कि तू चीन से इतनी दूर किस वास्ते आया साईं। और वो तेरा खास काम कौन-सा है?
सब बताता हूं मूलचन्दानी। मगर ये...
साईं।ये दोनों मेरे आजू-बाजू हैं।इनसे क्या छुपाना? ये बात को कानों तो जाने देते हैं मगर बाहर नहीं निकलने देते।

तो सुनो मूलचन्दानी। कुछ दिनों पहले चीन से हमारा एक जासूस ताउमान भारत आया था।

यहां आकर उसने किसी तरह तुम्हारे देश के फौजी ठिकानों के चित्र व नक्शे हासिल किए थे।

एक दिन सेना से संबंधित कुछ महत-
पूर्ण जानकारियां हासिल करने के उद्दे
से वह मुम्बई के मिलिट्री कैंट में घुस ग

दुर्भाग्यवश उसे सेना के जवानों ने पकड़ लिया।

मगर पकड़े जाने से पूर्व वह अपना लाइटरनुमा कैमरा... जिसमें फौजी ठिकानों के तमाम चित्र व नक्शे एक माइक्रोफिल्म में कैद थे, लाल पत्थर से निर्मित एक बेहद कलात्मक व खूबसूरत तोप की बैरल में छुपा चुका था।

वह तोप मिलिट्री कैंट के रेड सर्किल एरिया में एक पत्थर के ऊंचे टीलेनुमा चबूतरे पर रखी हुई है।

लेकिन तुम्हें इन सब बातों की जानकारी कैसे है? खासकर तोप की बैरल में रखे लाइटरनुमा कैमरे की खबर तुम्हें कैसे लगी?
बताता हूं।

दरअसल ताजमान को गिरफ्तार करके मिलिट्री कैंट में ही बनी जेल में डाल दिया गया था...
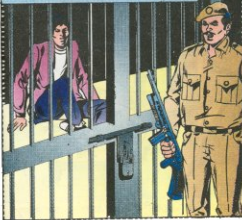
...जहां उसने एक सैनिक को लालच देकर अपनी तरफ कर लिया और कैमरे की बाबत सारी बात कोड भाषा में लिखकर एक अंगूठी में छुपा दी।

उसी सैनिक के माध्यम से वह अंगूठी चीनी दूतावास पहुंची। और दूतावास से चीनी सीक्रेट सर्विस के ऑफिस में।
हमें तोप की बैरल में छुपा वह लाइटरनुमा कैमरा हासिल करना होगा सर!

हमने यह केस तुम्हारे हवाले कर दिया है चुंग-ली। अब तुम जो चाहो करो। हमें सिर्फ वो लाइटर नुमा कैमरा चाहिए।
यस सर!

उसके बाद मैंने तुमसे सम्पर्क स्थापित किया। फिर मैं चीन से मुम्बई आ पहुंचा।

बोत अच्छा किया साईं, बोत अच्छा किया। मगर इस काम के लिए तुम हमें रोकड़ा कितना देगा?
एक करोड़ अमेरिकन डॉलर।

बढ़िया... बढ़िया... बोत बढ़िया। हम यह केस तुम्हारे हवाले करता है रोशन। तोप की नाल से कैमरा न मिले तो पूरी तोप ही उठा लाओ।

तोप की बैरल से वह लाइटरनुमा कैमरा निकाल लाने की मेरे दिमाग में एक शानदार योजना है बॉस।
तो जल्दी बता नी। फालतू सस्पेंस क्यों झाड़ रहा है साईं।
रोशन उर्फ राम अपनी योजना बताता चला गया।

तीव्र चरमराहट के साथ रुकी वह वैन।
जल्दी करो! वह घर में अकेली होगी।
चरड़ऽऽड़ऽऽड़ऽऽड़ऽऽड़ऽऽ
धड़धड़ाते हुए चारों बदमाशों ने सुमित्रादेवी के घर में प्रवेश किया।
क... कौन ? कौन हो तुम?
आवाज नहीं... वरना गोली मार दूंगा।
उफ! लगता है ये लोग मेरे घर चोरी के उद्देश्य से घुसे हैं।
दिलासा भी बाजार सामान लेने गई है। अब क्या करूं ?
मकड़ा साहब! वह छोकरी तो कहीं दिखाई नहीं पड़ रही है।
कोई बात नहीं! हम यहीं बैठकर उसका इंतजार करते हैं।

देख तो झंगू! फ्रिज में यदि कुछ खाने-पीने का सामान पड़ा हो तो निकाल ला।
बहुत अच्छा मकड़ा साहब!

हे भगवान! दिलासा को इन बदमाशों के चंगुल में फंसने से बचा लेना। उसे... उसे कहीं अटका देना।

इधर घर के बाहर खड़ी वैन को देखकर ठिठक गई दिलासा-
fenzz
यह वैन क्यों खड़ी है घर के सामने? मुझे छुप कर देखना चाहिए!
RNG-23

ओह! घर पर बदमाश जने बैठे हैं। और उन्होंने मम्मी को बन्धक बना रखा है! अब क्या करूं?

यदि शोर मचाऊंगी तो वे मम्मी को मार डालेंगे। मुझे रहीम भैया से मदद मांगनी चाहिए।

चौंक पड़ी थी राधादेवी दिलासा की बात सुनकर।
घर में बदमाश।
हां आंटी। उन्होंने मम्मी को बन्धक बना रखा है। रहीम भैया कहां हैं?
वह तो पुलिस थाने गया है...राम के बारे में पूछताछ करने। ठहर...मैं पुलिस थाने ही फोन करती हूं।

इधर पुलिस थाने में-
कमाल करते हैं आप इं० साहब ! उस दिन तो बड़े शेर की तरह दहाड़ते हुए घर पर आए थे आप। छाती ठोक कर ले गए थे राम को।

तुम चाहे अब भी उसे राम समझते रहो। मगर वह रोशन है। और अगर वह जेल से फरार हो गया तो इसमें मेरा क्या दोष?
हां। आपका क्या दोष। आपने तो खूब वाह-वाही का काम किया है। आपको तो ईनाम मिलना चाहिए।

मैं तुम्हारी परेशानी समझ सकता हूं रहीम। हो न हो, रोशन की जेल से फरारी के पीछे किसी बड़े गैंग का हाथ है। मैं उसी गैंग की जड़ तक पहुंचने की...
ट्रिन ट्रिन
तभी फोन की घंटी ने बातचीत में विघ्न डाला

हैलो! इं० द्रोण स्पीकिंग। व्हाट! ओह! मैं अभी रहीम के साथ पहुंच रहा हूं।

उफ! यह सब क्या हो रहा है द्रोण! हम पीछे वाली घटनाओं की जड़ तक पहुंच नहीं पाते और उससे पहले ही नयी घटना घट जाती है।

तुम मानो या ना मानो रहीम। मगर यह घटना मेरे इस दावे की पुख्ता करती है कि...

...रोशन का सम्बन्ध किसी गैंग से है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह याददाश्त खोने का ढोंग कर रहा थ और यहां वह अपनी मां व बहन से मिलने के वास्ते आया था।

फिर वह अपनी ही मां का अपहरण क्यों करवाएगा ?
हो सकता है उसने बदमाशों को अपनी मां व बहन को लिवा लाने के लिए ही भेजा हो, जिसे हम अपहरण समझ रहे हैं।
वे बदमाश दिलासा को भी साथ ले जाते। मगर संयोगवश दिलासा अपने घर के बजाय राधादेवी के पास चली आई और बदमाशों ने ज्यादा इन्तजार करना उचित नहीं समझा।
तुम्हारे तर्क में दम तो है द्रोण, फिर भी ये पूरी तरह गले नहीं उतरते। कहीं न कहीं कोई बहुत बड़ा चक्कर है, जिसे हम समझ नहीं पा रहे।
मान लिया कि वह रोशन ही था तो फिर सबसे बड़ा सवाल यह उठता है कि मेरा बेटा राम कहां है ?
और उसने कई दिनों से हमसे सम्पर्क स्थापित क्यों नहीं किया ?
इन प्रश्नों का जवाब डॉ. द्रोण के पास भी नहीं था।
इधर होटल गरुड़ में-
बड़ी मकड़ा! लगता है आजकल तू सठियाने लगा है। तेरे दिमाग का पुर्जा चलते-चलते घिस गया है। बोल साई, यही बात है ना ?
लड़की को साथ क्यों नहीं लाया ?

सॉरी बॉस। मगर मैं क्या करता ? वह लड़की घर में थी ही नहीं। हमने बहुत इंतजार किया। फिर वहां ज्यादा रुकना भी खतरे से खाली नहीं था।
मगर हमारी योजना का तो पुलिन्दा बन्ध गया नी। अब तोप की नाल में से कैमरा क्या तेरी अम्मा निकाल कर लाएगी ?

राम उर्फ रोशन ने बात को और बिगड़ने से रोका।
कोई बात नहीं बॉस! वह लड़की कहीं भागी नहीं जा रही है। हम उसे अब भी मंगवा सकते हैं।

यानी अभी मैं कैमरे को पाने की आशा रख सकता हूं!
बिल्कुल चुंगली साहब...हण्ड्रेड परसेंट!

एक छोटी सी कोठरी में कैद किया गया था सुमित्रादेवी को।
मांऽऽऽ

तू!
हां मां। मैं... तेरा रोशन! तेरा बेटा रोशन!

अब किस मुंह से अपनी मां के पास आया है करमजले। मत ले अपनी गंदी ज़ुबान से मां का नाम। अपवित्र हो जाएगा 'मां' शब्द।
मेरी याददाश्त वापस लौट आई है मां। मैं जानता हूं कि तू मुझसे नाराज है।
अरे कपूत! ऐसे नीच कर्म करने से तो अच्छा था कि तेरी याददाश्त ही वापस न लौटती।
मगर मैं क्या करता मां! मैं बहुत पहले से ही अंडरवर्ल्ड के गहरे दलदल में फंस गया था ..

...मगर मैं अब इस दलदल से निकलना चाहता हूं!
सच! सच कह रहा है तू?

हां मां। मगर मैं जाने से पहले अंडरवर्ल्ड का यह साम्राज्य ध्वस्त करना चाहता हूं। जैसे चाणक्य ने अपनी चतुराई से नन्द वंश का सर्वनाश किया था। मैं "चाणक्य का बेटा" बनकर दिखाना चाहता हूं मां।

यदि तूने ऐसा कर दिखाया तो मैं तेरे सारे गुनाह माफ कर दूंगी मेरे लाल।
तो मां। यह ले कागज और पैन। और जैसा मैं कहूं वैसा लिखती जा ताकि मेरी योजना सफल हो सके।

सुमित्रादेवी द्वारा इंकार करने का तो अब प्रश्न नहीं नहीं उठता था।
fenzz

प्रिय रहीम,
मैं यहां दुश्मनों के चंगुल में फंसी हुई हूं। इन्होंने रोशन को भी बन्धक बना रखा है। ये लोग दिलासा के द्वारा अपना कोई बहुत बड़ा मकसद हल करना चाहते हैं। यदि तुम दिलासा को साथ लेकर पत्रवाहक के साथ नहीं आये तो ये हमें मार डालेंगे।

– सुमित्रादेवी

खुशी से दमक रहे थे शैतानों के मुखड़े।
धन झूलेलाल! तेरा दिमाग तो कम्प्यूटर की तरह दौड़ता है साईं। तूने तो बैठे-बैठे ही इस लड़की को यहां बुला लिया।
थैंक्यू बॉस।
काम की बात करो मिस्टर! राम व सुमित्रादेवी कहां हैं?? और तुम दिलासा से कौन-सा काम लेना चाहते हो?
सब बताता हूं। इस मॉडल को ध्यान से देखो लड़के। यह मुम्बई के मिलिट्री कैंट का मॉडल है। मॉडल में जो ऊंचा टीला दर्शाया गया है, खासकर उस पर रखी तोप को ध्यान से देखो। क्योंकि यही तोप हमारा लक्ष्य है।
यानी तुम यह तोप चुराना चाहते हो।
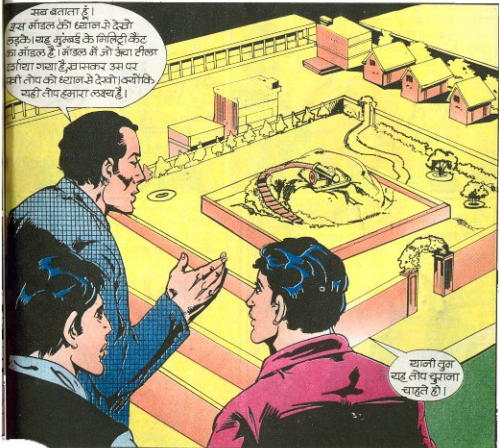
तोप नहीं। तोप की बैरल में रखा एक छोटा सा लाइटरनुमा कैमरा।
चूंकि तोप की बैरल इतनी संकरी है कि उसमें नन्हे हाथ ही जा सकते हैं, इसीलिये इस महत्वपूर्ण काम के लिए हमने इस पुटड़ी को चुना है।

क्योंकि यह लड़की अपने नन्हे-नन्हे हाथ उस तोप की बैरल में डालकर वह कैमरा निकाल सकती है।

मान लिया कि दिलासा कैमरा निकालने में सफल भी हो गई। मगर मिलिट्री कैंट में इतना कड़ा पहरा रहता है कि वहां से किसी चीज को चुराकर बाहर निकलना असम्भव है।

तुम्हारी दोनों समस्याओं का हल हमारे पास है। आजकल राम के पिता कर्नल राघव की ड्यूटी मिलिट्री कैंट में ही लगी हुई है। तुम कर्नल राघव के साथ मिलिट्री कैंट देखने के बहाने आसानी से अंदर प्रवेश कर सकते हो।

रही बात कैमरे को छुपा कर लाने की तो यह लो गुब्बारा।
गुब्बारा! ये भला मेरे किस काम का?

यह गुब्बारा आम गुब्बारों जैसा नहीं है लड़की। इसकी डोरी खींचते ही यह दो भागों में खुल जाता है। और डोरी छोड़ते ही पुनः बन्द हो जाता है।

वाह-वाह! अपना चीनी भाई तो ीन से वड़ी जादू की चीज लाया है जी।
चूंकि दिलासा नन्ही बच्ची है इसलिये इसके हाथ में गुब्बारा देखकर कोई इस पर भी शक नहीं करेगा।

याद रखना पुट्ठे! अगर तुमने कोई चालाकी की या असफल होकर लौटे तो रोशन व सुमित्रादेवी की लाशें ही तुम्हें तोहफे में मिलेंगी।
कोई गलती नहीं होगी।

ड़ी देर पश्चात यह वैन इस टेढ़ी-मेढ़ी उबड़-खाबड़ सुरंग दौड़ी चली जा रही थी। सुरंग में रोशनी के लिए जगह- गह मरकरी बल्ब लगे हुए थे।
जब तुम हमें अपने बॉस के पास मिलवाने ले गए थे तब भी इसी सुरंग से ले गए थे और हम लौट भी इसी सुरंग से रहे हैं। आखिर तुम्हारे बॉस का अड्डा कहां पर है।
मुम्बई में ही कहीं पर है। अनजान लोगों को इसका पता न चले इसलिए उन्हें अड्डे तक पहुंचाने के लिए इस सुरंग का इस्तेमाल किया जाता है।

यह सुरंग मुम्बई के बाहर एक घने जंगल में खुलती है। इसलिए बाहरी व्यक्ति कभी यह पता नहीं लगा पाता कि बॉस का अड्डा मुम्बई की लाखों इमारतों में से किस इमारत के नीचे है?

मगर कोई सुरंग में प्रवेश करके भी तो पहुंच सकता है?

नहीं पहुंच सकता! क्योंकि सुरंग में जगह-जगह कैमरे लगे हैं। जिनका सीधा संबन्ध बॉस के पर्सनल टी.वी. सेट से है।

...सुरंग में किसी अनाधिकृत व्यक्ति के प्रवेश करते ही बॉस को पता चल जाता है। और हम उसे तुरन्त सुरंग में ही मार डालते हैं। तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूं कि यह सुरंग पांच किलोमीटर से कम लम्बी नहीं है।
ओह!

कुछ देर बाद वैन सुरंग से निकलकर जंगल में खड़ी थी।
अब कैमरे के साथ ही लौटना।
जरूर... जरूर।

अगले दिन किसी तरह कर्नल राघव को राजी कर रहीम व दिलासा उनके साथ मिलिट्री कैंट पहुंचे।
मैं अपने उच्चाधिकारियों के साथ एक मीटिंग में व्यस्त रहूंगा इसलिए मुझे देर हो सकती है। तुम दोनों मिलिट्री कैंट में घूम-फिरकर वापस लौट जाना।
जी अंकल।
fenzz

बहादुर सिंह... चट्टान सिंह! इन्हें अंदर जाने दो।
जी साहब।

कर्नल राघव के चले जाने के बाद -
अब क्या करें रहीम भैया?
अब हमें रेड सर्किल एरिया की तरफ बढ़ना है, तोप वहीं रखी है।

दोनों धीरे-धीरे रेड सर्किल की तरफ बढ़ने लगे।
उधर भी कड़ा पहरा है भैया!
चलती रहो। मैं कुछ-न-कुछ उपाय करता हूं।

काश! सुमित्रा आण्टी बदमाशों के चंगुल में नहीं फंसी होती तो अब तक मैं कैमरे की बात सेना के जवानों को बता चुका होता।
धड़कते दिल से दोनों रेड सर्किल पहुंचे।
ठहरो!!
RESTRICTED AREA
कहां जा रहे हो? यह सामने बोर्ड नहीं देखा। यह वर्जित क्षेत्र है।
गनवाले अंकल प्लीज। मुझे उस तोप तक जाने दो ना। मैं बस उस तोप को एक बार छूकर ही लौट आऊंगी।
RESTRICTED AREA
ऐसा नहीं हो सकता बिटिया रानी! कर्नल साहब को पता चल गया तो वे मेरी फौज से छुट्टी कर देंगे।
प्लीज अंकल! बस एक मिनट के लिए। किसी को पता नहीं चलेगा...प्लीज!
इस नन्ही बच्ची का दिल रख लीजिए अंकल। मैंने तो सुना है कि हमारे फौजी भाई बहुत नरम दिल के होते हैं। खासकर बच्चों के प्रति।

ठीक है। तुम जिद करते हो तो मैं केवल इस बिटिया रानी को तोप तक जाने दे सकता हूं। मगर तुम नहीं जाओगे।
मन्जूर है।
थैंक्यू अंकल!

गुब्बारे को हवा में झुलाती चिड़िया की भांति फुदकती हुई दिलासा तोप के निकट आ पहुंची।
इस समय उसका नन्हा-सा दिल रबर की गेंद की भांति उछल रहा था।

अगले क्षण वह हिम्मत जुटा कर गोल टीलेनुमा चबूतरे पर चढ़ गई।

चबूतरे पर चढ़कर उसने रहीम की तरफ देखा।

इधर रहीम फतह सिंह नामक उस फौजी को बातों में उलझाए हुए था।
फिर क्या हुआ अंकल?
फिर क्या! सन् 1971 में आखिर भारत व पाक के बीच युद्ध की शुरुआत हो गई...

...जब मेजर साहब ने हमें आगे बढ़ने का हुक्म दिया तो हम चीते की भांति पाक सैनिकों पर टूट पड़े। इस हमले में एकाएक मैं अपने साथियों से बिछड़ गया और तीन पाक सैनिकों ने मुझे घेर लिया।

फिर?

फिर क्या! मैंने आव देखा न ताव... फिरकी की तरह घूम कर तीनों को लम्बलेट कर दिया।

इधर दिलासा अपने काम में जुली हुई थी।

इस समय रहीम भैया ने गनवाले अंकल को बातों में उलझा रखा है। यही मौका है।

रहीम ने कनखियों से दिलासा की तरफ देखा।
खुदा का शुक्र है कि दिलासा तोप की बैरल से कैमरा निकाल पाने में सफल हो गई।
उसके बाद जानते हो क्या हुआ?
क..क्या हुआ?
कुछ नहीं! हमने दुश्मन की चौकी पर कब्जा कर लिया। चूंकि यह सब मेरे ही प्रयासों के कारण सम्भव हुआ था...
...इसलिए मेजर साहब ने उसी दिन से मेरा नाम फतहसिंह रख दिया।
ओह! अच्छा अच्छा।
अरे!
क..क्या हुआ?
मैंने अभी-अभी बिटिया के हाथ में थमे गुब्बारे को दो आगों में खुलते देखा था।
क्या?

नहीं...नहीं अंकल! आपको जरूर कोई गलतफहमी हुई है।
नहीं..मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई।
बड़ी अच्छी तोप थी रहीम भैया। मुझे तो उसे छूकर मजा आ गया। अब चलें।
एक मिनट बिटिया। जरा अपना गुब्बारा तो दिखाना।
जोरों से धड़क उठा दिलासा का नन्हा दिल।
ग..गुब्बारा?
हां गुब्बारा। मैंने थोड़ी देर पहले इसे दो भागों में खुलते देखा था।
हा..हा..हा.. भला गुब्बारा भी कहीं खुलता है। हा..हा..हा..
ओह! तो मेरी नजरों का धोखा होगा, ठीक है। तुम जा सकते हो।
चलो दिलासा।
दोनों इस तरह उड़न छू हुए मानो उन्हें फतह सिंह द्वारा दोबारा बुला लिए जाने का डर हो।
कुछ गड़बड़ जरूर है।

रेड सर्किल का एक गोल टर्न लेकर दोनों मिलिट्री कैंट के मुख्य द्वार पर पहुंचे।

घूम आये?

हां, गनवाले अंकल। बहुत अच्छा है मिलिट्री कैंट। खासकर रेड सर्किल में रखी लाल पत्थर की तोप।

तुमने उस तोप को छूकर देखा था?

न..नहीं। दूर-दूर से ही देखा था।

यह दिलासा की बच्ची सारा खेल खराब करेगी।

फिर भी हमें तुम्हारी तलाशी तो लेनी ही पड़ेगी। यह यहां का नियम है।

ठीक है, लीजिए तलाशी।

इधर फतहसिंह मिलिट्री कैंट के मुख्य द्वार तक पहुंचा।
अभी-अभी दो बच्चे बाहर निकले होंगे?
हां... क्यों... क्या बात है?

कुछ नहीं। मुझे उनसे कुछ पूछना है।

उधर रहीम व दिलासा एक टेक्सी में सवार होने जा रहे थे। तभी-
ठहरो!

फौजी अंकल, आप?
हां, मेरा मन कहता है कि मैंने जरूर गुब्बारे को दो भागों में खुलते हुए देखा था। वह नजरों का धोखा नहीं था।

मैं एक बार इस गुब्बारे को फिर से देखना चाहता हूं।
अवश्य देखिए।

एकाएक फतहसिंह के हाथ से गुब्बारे की डोरी खिंच गई।
अरे! यह तो सचमुच दो भागों में खुल गया। तुमने मुझसे झूठ बोला था?

हमने झूठ कहां बोला फौजी अंकल! हमने तो ये कहा था कि जब आप मुझे अपनी कहानी सुना रहे थे तब गुब्बारा दो भागों में नहीं खुला था।
हालांकि यह एक मैजिक बलून है। डोरी खींचते ही यह दो भागों में खुल जाता है और डोरी छोड़ते ही पुनः बन्द हो जाता है। मगर यह उस समय नहीं खुला था।

अब हम जाए अंकल?
अं..हां...हां.. जाओ।

अगले क्षण टैक्सी धूल उड़ाती हुई आगे बढ़ गई।
गुब्बारा दो भागों में खुल सकता है। मगर उस समय नहीं खुला जब मैंने ध्यान से देखा था। उस समय डोरी खींचने से अचानक ही खुला जब मैंने उसे दोबारा देखा। उफ्..यह क्या चक्कर है? मेरा दिमाग चक्करघिन्नी बना गए दोनों।

इधर टैक्सी में -
शुक्र है। मैंने मिलिट्री कैंट से बाहर निकलते ही गुब्बारे में छुपा कैमरा निकालकर पैंट की जेब में डाल लिया था। वरना वह फौजी अंकल के हाथ पड़ जाता!

ठीक कहा तुमने। गुब्बारा खोलने में तो वो कामयाब हो ही गए थे।
हिम्मते मरदां मददे खुदा।

होटल गरूड़ में खुशी का माहौल था।

धन्न झूलेलाल! अपना पुटड़ा-पुटड़ी तो कमाल का काम कर दिखाया साईं।

तारीफ तो रोशन की होनी चाहिए। जिसने अपने दिमाग से इस मुश्किल काम को आसान बना दिया। ला..वह गुब्बारा मुझे दे।

इतनी जल्दी भी क्या है चुंगली साहब। अब तो ये आप ही की अमानत है।

नहीं..अब हमसे सब्र नहीं होता। हम इस कैमरे को अपने हाथों में लेकर देखना चाहते हैं।

पहले सुमित्रा आंटी व राम को रिहा करो।

ठीक है। मकड़ा, सुमित्रादेवी को रिहा कर दे साईं।

और राम?

भरोसा रख नी मुझपर। पहले कैमरा हाथ में आने दे। फिर उस पुट्‌ठे को भी रिहा कर दिया जाएगा। वह भी ढोल-बाजे के साथ।
ठीक है।

हा..हा.. हा.. अब भारत की सैनिक शक्ति मेरी मुट्‌ठी में होगी।

ओय.. यह तो लाइटर है। केवल लाइटर। इसमें तो माइक्रोफिल्म की जगह गैस भरी हुई है।
मुझे क्या मालूम। मुझे तो तोप की बैरल में यही लाइटरनुमा कैमरा पड़ा मिला था।

झूठ बोलते हो तुम। बताओ.. असली कैमरा कहां है?
वड़ी बोल नी पुट्‌ठे!

कैमरा ये रहा।
क..कैमरा तुम्हारे पास?

तभी-
बॉस...गजब हो गया बॉस। बाहर इसकी शक्ल का एक आदमी खड़ा है। जो अपने आपको रोशन बता रहा है।
रोशन! उसे जल्दी अन्दर लाओ नी।

राम-रहीम के अलावा हॉल में मौजूद प्रत्येक शख्स चौंक पड़ा था उस शख्स को देखकर।
र..रोशन तुम?
हाँ बॉस। मैं ही असली रोशन हूं। आपके साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है बॉस। नकली रोशन बना यह कमीना और कोई नहीं, बल्कि स्वयं भारतीय सीक्रेट सर्विस का जासूस राम है।

वड़ी पूरी कहानी साफ-साफ सुना नी। खामख्वाह सस्पेंस क्यों पैदा कर रहा है साई।
बॉस! उस दिन सिल्वर बीच से दो करोड़ का सोना लेकर मैं, गरजा व परसा रवाना हुए थे।
fenzz

हमारी कार धीरे-धीरे दाहिसर खाड़ी के पुल की तरफ बढ़ रही थी।

मगर न जाने कैसे सोने की खबर राम-रहीम को मिल गई और वे बूल की तरह दाहिसर खाड़ी के पुल पर आ धमके।
रुक जाओ!!
राम!
रहीम!
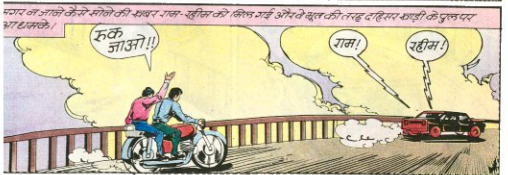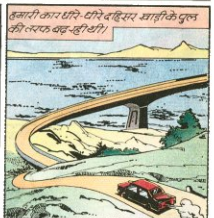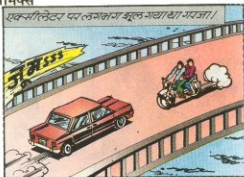
गाड़ी मत रोक। चढ़ादे सालों पर।
एक्सीलेटर पर लगभग झूल गया था गरजा।
जूम्sss
मगर हमसे कहीं ज्यादा फुर्तीले साबित हुए थे राम-रहीम।
उफ!
गरजा... ब्रेक लगा।
मगर तब तक कार गरजा के नियंत्रण से बाहर हो चुकी थी।
!!!
अगले क्षण वह रेलिंग तोड़ती चली गई।
धड़ाक

तभी एक हाथ ने मेरी शर्ट का कॉलर पकड़कर मुझे कार से बाहर खींच लिया।

उधर कार पुल से नीचे गिरकर दहिसर खाड़ी में समा चुकी थी। गरजा व परसा की लाशों का कहीं पता नहीं था।
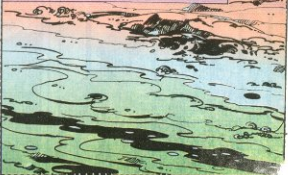
उसके बाद क्या हुआ साईं? बोल नी... क्या हुआ उसके बाद?

उसके आगे की कहानी तुम्हें मैं सुनाता हूं मूलचन्दानी।

जब मैंने यह देखा कि रोशन की शक्ल सूरत व कद-काठी हू-ब-हू मुझसे मिलती-जुलती है तो मैंने इससे फायदा उठाने का निश्चय किया...

..और रोशन से पूरी जानकारी हासिल करने के बाद मैंने रोशन को भारतीय सीक्रेट सर्विस की जेल में डाल दिया।
अब शुरू होता है चाणक्य के बेटे का असली खेल!

उसी समय मिलिट्री कैंट में दूसरी ही कहानी चल रही थी। चीनी जासूस ताउमान सैनिकों की पकड़ में आ चुका था।

ताउमान ने जेल से फरार होने के लिए एक सैनिक को लालच में फंसा कर वह अंगूठी दी, जिसमें चुंगली के लिए कोड संदेश लिखा हुआ था।

मगर भारत का सैनिक बिकाऊ नहीं होता चुंगली। उसने वह अंगूठी लाकर मेरे पापा कर्नल राघव को दे दी और पापा ने वह अंगूठी मुझे दी।

मैं उस कोड संदेश से इतना ही पता लगा पाया कि वह संदेश तुम्हारे अर्थात चुंगली के नाम था। मगर उस संदेश में क्या लिखा था, यह मैं नहीं जान पाया।

तब पापा और मैंने एक प्लानिंग के तहत अंगूठी को उसी सैनिक के हाथों चीनी दूतावास भिजवा दिया। जहां से अंगूठी तुम्हारे पास पहुंच गई।

इधर मैं मूलचन्दानी तक पहुंचने के लिए अपनी याददाश्त खोने का नाटक करके दहिसर खाड़ी के निकट मुम्बई पुलिस को बेहोश पड़ा मिला।

फिर मेरे दिमाग को उस समय झटका लगा जब अस्पताल से सेठ जीवनदास मुझे अपना होनेवाला दामाद बताकर अपनी कोठी पर ले गया।
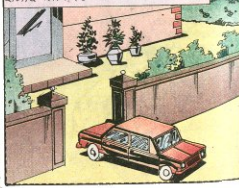
जहां से मकड़ा ने मेरा अपहरण करके मुझे तुम तक पहुंचा दिया। वहां किसी तरह मुझे मालूम पड़ गया कि तुम्हारी पुंगली के साथ दोस्ती है।
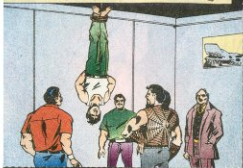
अपनी योजना को पुख्ता करने के लिए मैं दहिसर खाड़ी में कूदकर राजनगर पहुंचा... और रहीम के जरिये अपने घर तक -

यहां तक रहीम भी नहीं जानता था कि मैं याददाश्त खोने का ड्रामा कर रहा हूं। इसीलिए मैंने रहीम को सारी बात समझाई। घर पहुंचते-पहुंचते रहीम मेरी सारी योजना से अवगत हो चुका था।

मुझे दूसरा झटका उस समय लगा जब सुमित्रा देवी ने मुझे अपना बेटा कहा।
र..रोशन! मेरे बेटे!!
भैय्या!!
मैं फौरन समझ गया कि मैंने जिस रोशन को पकड़ा है, वह सुमित्रा देवी का बेटा है।

फिर तुम्हारा विश्वासपात्र बनने के लिए मैंने दहिसर खाड़ी से तुम्हारा दो करोड़ का सोना वापस बरामद करवा दिया।
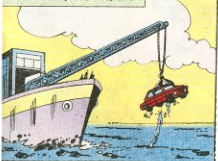
सोना वापस बरामद करवाना मेरी योजना का महत्वपूर्ण अंग था। क्योंकि इस सोने की कीमत उस फौजी जानकारी के आगे कुछ भी नहीं थी, जिसे वापस हासिल करना मेरा असली उद्देश्य था।

और जब दिलासा ने अपना काम कर दिखाया तब तुम्हारे कहने पर मैं ही उन्हें रिसीव करने सुरंग मार्ग से जंगल में पहुंचा।

वापस लौटते समय मैंने रहीम से असली लाइटरनुमा कैमरा लेकर गुब्बारे में साधारण सा लाइटर रख दिया।

देखा बॉस! मैंने कहा था ना कि यह कमीना बहुत बड़ा धूर्त है। वह तो अच्छा हुआ कि मैं सीक्रेट सर्विस की कैद से भागकर यहां आ पहुंचा। वरना इसकी पोल कभी नहीं खुलती।
चिन्ता मत कर रोशन। मैं इन सबको बुरी मौत मारूंगा। मगर मारने से पहले इसे यह जरूर बताऊंगा कि सेठ जीवनदास रोशन को अपनी कोठी पर क्यों ले गया था...

fenzz

...क्योंकि मैं ही सेठ जीवनदास हूं... और कोमल से रोशन की मंगनी के जो फोटोग्राफ्स व सबूत मैंने पुलिस को दिखाए थे, वो सब नकली थे।

मगर तुम अपनी ही बेटी का मर्डर होते कैसे देख सकते थे मूलचन्दानी?

क्योंकि तुम्हारी कोठी से रोशन का अपहरण करते समय मकड़ा ने उसे मार डालने का पूरा इन्तजाम कर दिया था।

क्योंकि कोमल मेरी सगी बेटी नहीं है!
व्हाट?
!!!
???

हां, मेरी बीवी ने एक मरी हुई बच्ची को जन्म दिया था। तब मेरे कहने पर डॉक्टर ने किसी और की बच्ची को मेरी बीवी की गोद में डाल दिया था।
वह बच्ची किसी गरीब स्त्री की थी, जो उसे जन्म देकर चल बसी थी।

कहीं यह आज से अट्ठारह वर्ष पूर्व गांधी मैमोरियल अस्पताल की घटना तो नहीं है? क्या वह 10 दिसम्बर की रात थी?
हां, मगर तुम यह सब कैसे जानते हो?

क्योंकि वो गरीब स्त्री मेरी मां थी और जब मैं दवा का प्रबन्ध करके वापस लौटा, तो डॉक्टर ने मुझे बताया कि मेरी मां ने एक मृत बच्ची को जन्म दिया है। जबकि वह तुम्हारी बच्ची थी।

भैया!

क.. कोमल तुम? रोशन के भेष में?
हां भैया! मैं ही यहां रोशन बनकर आई थी!

मगर तुम तो कोठी में जल मरी थी?
नहीं! मैं मरी नहीं थी जीवनदास।
यह रहस्य तुम्हें मैं बताता हूं साई।

उस दिन जब मैं राम की तलाश में तुम्हारी कोठी पर पहुंचा तो राम का अपहरण हो चुका था। मैंने किचन में रस्सियों से बंधी पड़ी कोमल को आजाद करवाया।

फिर मुर्दाघर से एक मृत लड़की की लाश लाकर कोठी में रखी और कोठी को आग के हवाले कर दिया। सबने यही समझा कि कोमल भीषण अग्निकांड में जल मरी है।
कोमल को मैं अपने साथ राजनगर ले आया और उसे मैंने एक मकान में छुपा दिया।
और फिर मेरे कहने पर ही कोमल रोशन बनकर यहां आई ताकि तुम्हारी असली सूरत देख सके।

धन्न झूलेलाल! तू लड़का है कि आफत।
मैं चाणक्य का बेटा हूं जीवनदास। जिसने तेरे सर्वनाश का बीड़ा उठाया है।

देख.. आज तेरा साम्राज्य डोल उठा है। तेरे चारों ओर मौत ही मौत है। यही तेरा अंजाम था जीवनदास।

ठहरो राम भैया। इसे मैं गोली मारूंगी। इसने मुझे बहुत दुख दिए हैं।
नहीं..नहीं। मुझे मत मार बेटी। मैं तेरा पिता हूं।

किन्तु रिवॉल्वर से निकली गोली रिश्ते-नाते कहां देखती है।
आऽऽ
धांय

अब तुम्हें आखिरी रहस्य भी बता दूं जीवनदास। वरना मरने के बाद तुम्हारी आत्मा भटकती रहेगी।

रोशन आज भी भारतीय सीक्रेट सर्विस की कैद में है। वहां से उसके निकल भागने का तो प्रश्न ही नहीं उठता अफसोस...तुम मेरी चाल में फंस गए।
तू..तू बड़ा धूर्त है राम।

इधर सेठ जीवनदास के प्राण-पखेरू उड़े उधर गुरगुली की आवाज गूंजी।
खबरदार। कोई मेरी तरफ बढ़ा तो इस बच्ची की खोपड़ी फोड़ दूंगा।
दिलासा।

हा...हा..हा... ला राम...वह लाइटरनुमा कैमरा मुझे दे। जल्दी दे...मुझे यहां से निकलना है।

राम से कैमरा हासिल करके चुंगल्ली होटल के बेसमेन्ट में बनी सुरंग की तरफ दौड़ पड़ा।
हा..हा..हा... मूलचन्दानी तो दुनिया से खिसक गया। मगर अपना तो मुफ्त में काम हो गया।

हॉल में गोलीबारी शुरू हो गई
तड़ तड़ तड़
fenzz

तुम इन सबको लेकर निकलो राम। मैं इन कमीनों को देखता हूं।
भैया... हम तुम्हें छोड़कर नहीं जाएंगे।

अरी पगली। जीवनभर दौलत की खातिर अनगिनत पाप किए हैं मैंने। अब अंतिम समय में तो अपने भाई को थोड़ा पुण्य कमा लेने दे।

इधर राम गोलियों की बाढ़ से सुमित्रादेवी व कोमल को बचाकर बाहर भागा।

उधर रहीम मोटर बाइक लिए सुरंग की तरफ दौड़ पड़ा।

मकड़ा बहादुरी से होटल के बेसमेन्ट में फैले मूलचन्दानी के आदमियों का मुकाबला करता रहा।
अब तक राम-रहीम इस होटल से बहुत दूर निकल चुके होंगे।
टेंट... टेंट... टेंट...टेंट...
कुछ ही क्षणों में मकड़ा बेसमेंट में बने इस स्टोर में था।
ओ मेरी बहन! तू जहां भी रहे, खुश रहे... आबाद रहे। अब तेरा भाई अंतिम सफर करता है।
RDX
RDX

अगले क्षण मकड़ा ने अपने हाथ में थमा शक्तिशाली बम आर.डी.एक्स. से भरी पेटी पर दे मारा।
RDX

भीषण विस्फोट के साथ मकड़ा के चीथड़े उड़ गए।
बड़ाम्म

ज्वालामुखी फट पड़ा था जैसे-
खत्म हुआ था मूलचन्दानी का साम्राज्य।
बड़ाम्म
जीवन के अंतिम क्षणों में मकड़ा की जुबान पर अपनी प्यारी बहन का ही नाम था। उफ... कैसा था यह विधाता का खेल!

इधर सुरंग में बेहताशा दौड़ी आ रही थी जीप।
छोड़ दो मुझे.. छोड़ दो।
हा..हा..हा... छोड़ दूंगा तुझे बेबी। पहले इस कमबख्त सुरंग से तो निकल जाऊं।

अब सुरंग का दूसरा मुंह दिखाई देने लगा है। अब मुझे चीन पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता।

गलत... अब तुझे ऊपर पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता।
त..तुम। यहां? मगर तुम तो होटल गरूड़ में थे? तुम आदमी हो कि भूत? जो पलक झपकते जहां चाहे पहुंच जाते हो?

मुझे मालूम था बेटा कि तुम दिलासा को लेकर इसी सुरंग में से निकलोगे। इसीलिए मैं तुमसे पहले सड़क के रास्ते सुरंग के मुहाने पर आ पहुंचा था, जो जंगल में खुलता है।

मेरे सामने से हट जाओ राम। वरना मैं इस छोकरी की खोपड़ी उड़ा दूंगा।
भैया sss

तभी-
धांय
आऽऽऽ

र-रहीम?
मैं तुम्हारे पीछे-पीछे ही आ रहा था चुंगली बेटे।

तब तक राम चीते की भांति चुंगली पर छलांग लगा चुका था।
तुम्हारा खेल खत्म हुआ चुंगली।

तुम्हारी ताउ मान से मिलने की इच्छा थी ना। अब मैं तुम्हें ताउ मान के पास ही पहुंचा देता हूं।

तुम्हें यह जानकर दुख होगा चुंगली कि ताउ मान तो उसी दिन मारा गया था जिस दिन उसने एक सैनिक को रिश्वत देकर पटाने की कोशिश की थी और वह अंगूठी सैनिक को सौंपी थी।
न.. नहीं।

हां प्यारे। मगर तुम्हें अपने जाल में फंसाने के लिए ही मैंने यह खबर लीक नहीं होने दी थी।
धांय

गोली पगली के माथे में धंसी थी। वह कटे वृक्ष की भांति राम के पैरों में आ गिरा था।
भैया।
डर मत पगली...शैतान खत्म हुआ।

अगले दिन भारतीय सीक्रेट सर्विस के ऑफिस में–
मुझे माफ कर दो राम।
सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते रोशन। याद रखो, मातृ-भूमि की सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं। अब मेहनत से रोटी कमाना।

तू सचमुच चाणक्य का बेटा है राम। बिछुड़ों को मिलाने वाला...सबका दुःख हरनेवाला... दुश्मन का सर्वनाश करनेवाला।
नहीं मांजी। मैं एक आम हिन्दुस्तानी हूं.. सिर्फ हिन्दुस्तानी। अरे हां रहीम, कोमल ने क्या फैसला किया?

उसने सीक्रेट सर्विस जॉइन करने का फैसला कर लिया है राम और कहती है कि अपने भैया की शहादत को वह व्यर्थ नहीं जाने देगी, और देश के लिए काम करेगी।
गुड।

और फिर समूचे राजनगर में खुशी की लहर दौड़ गई थी।
हुर्रे! राम की याददाश्त वापस लौट आई।
काश! इन्हें सारी सच्चाई मालूम होती। मगर आप तो सच्चाई जानते हैं न दोस्तो!
समाप्त